मत्स्य पालकों हेतु मत्स्य रोग प्रबन्धन एवं निदान' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.परि.–शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय द्वारा जल जीव रोग निगरानी एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम (नासपाड) के अर्न्तगत 'मत्स्य रोग प्रबन्धन एवं निदान' शीर्षक पर कृषकों के लिए दिनांक 30 मार्च, 2015 को दूनागिरि, उत्तराखण्ड में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दूनागिरि के 33 स्थानीय कृषकों ने भाग लिया। सामान्यतः मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में मत्स्य पालन में मछली में पाए जाने वाले रोग के कारकों, लक्षणों, उनके रोकथाम एवं नियंत्रण पर विस्तृत चर्चा की गयी। नासपाड के परियोजना अन्वेषक डा. अमित पाण्डे ने उत्तम मत्स्य पालन एवं मत्स्य स्वास्थ्य प्रबन्धन पर गहन विचार विमर्श किया जिससे कि मछलियो को बीमारियों से दूर रखा जा सके। इस अवसर पर हिन्दी में 'शीतजल मछलियों के रोग, निदान एवं उपचार' की एक विवरणिका का विमोचन ग्राम प्रधान श्रीमती नन्दी देवी द्वारा किया गया तथा इस विवरणिका को कृषकों में वितरित भी किया गया। इस हिन्दी विवरणिका का उददेश्य पर्वतीय मत्स्य पालकों को मछली से सम्बन्धित रोगों एवं उनके निदान सम्बन्धी जानकारी हिन्दी में ही उपलब्ध कराना था। प्रशिक्षण के समापन पर मत्स्य कृषकों ने भा.कृ.अनु.परि.–शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय का आभार प्रकट किया एवं यह आशा प्रकट की कि इस प्रकार के कार्यक्रम भविष्य में भी आयोजित किऐ जाते रहेंगे। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम नासपाड योजना के अर्न्तगत भारत सरकार एवं राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, (एनएफडीबी) द्वारा वित्त पोषित था एवं इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक भा.कृ.अनु.परि.–शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय के डा. अमित पाण्डे, एन. एन. पाण्डे, श्री सुमन्त मलिक एवं डा. डी. ठाकुरिया थे।

मध्य उंचाई वाले मत्स्य तालाबों में आमतौर पर पायी जाने वाली बीमारियों एवं उनके रोकथाम के उपायों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए कृषकों के साथ पारस्परिक समन्वयन

शीतजल मछलियों में रोग,निदान एवं उपचार' नामक विवरणिका का विमोचन

प्रतिभागियों के साथ सामूहिक छाया–चित्र